

## किसान क्षेत्र विद्यालय: एक प्रभावी विस्तार मॉडल



सुप्रज्ञ कृष्ण गोपाल<sup>1\*</sup>,  
मंजुल जैन<sup>2</sup>, रवि पटेल<sup>2</sup>,  
रजनीश कुमार<sup>3</sup>

<sup>1</sup>कृषि प्रसार एवं संप्रेषण विभाग,  
सैम हिंगनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी  
एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, नैनी,  
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश- 211007

<sup>2</sup>सहायक, प्रोफेसर, कृषि  
विद्यालय, एकलव्य विश्वविद्यालय,  
(म.प्र.)

<sup>3</sup>सहायक प्रोफेसर, कृषि  
विद्यालय, ज्ञानवीर विश्वविद्यालय,  
सागर (मध्य प्रदेश) 470115

\*अनुरूपी लेखक  
सुप्रज्ञ कृष्ण गोपाल\*

आधुनिक कृषि प्रसार में यह स्पष्ट हो चुका है कि किसानों को केवल सूचना प्रदान करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें सीखने की प्रक्रिया का सक्रिय सहभागी बनाना आवश्यक है। पारंपरिक विस्तार प्रणाली जहाँ एकतरफा ज्ञान हस्तांतरण पर आधारित रही है, वहाँ आधुनिक विस्तार मॉडल सहभागिता, अनुभव और स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप सीखने पर बल देते हैं। इसी संदर्भ में किसान क्षेत्र विद्यालय एक अभिनव, सहभागी एवं व्यवहारिक विस्तार मॉडल के रूप में उभरा है।

किसान क्षेत्र विद्यालय “करके सीखने” के सिद्धांत पर आधारित है, जिसमें किसान स्वयं खेत में प्रयोग करते हैं, अवलोकन करते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं। यह मॉडल विशेष रूप से समेकित कीट प्रबंधन, फसल प्रबंधन, प्राकृतिक संसाधन संरक्षण और सतत कृषि को बढ़ावा देने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ है।



## 2. किसान क्षेत्र विद्यालय की अवधारणा

किसान क्षेत्र विद्यालय एक खुले खेत में संचालित गैर-औपचारिक प्रशिक्षण प्रणाली है, जिसमें किसानों का एक समूह पूरे फसल चक्र के दौरान नियमित अंतराल पर एकत्र होकर फसल की वृद्धि, कीट-रोग स्थिति, मित्र कीटों की भूमिका, मृदा एवं जल प्रबंधन का प्रत्यक्ष अवलोकन करता है।

इस मॉडल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें—

- ✓ किसान स्वयं प्रयोगकर्ता, विश्लेषक और निर्णयकर्ता होते हैं
- ✓ विस्तार कर्मी की भूमिका शिक्षक की नहीं, बल्कि सुविधाकर्ता की होती है
- ✓ निर्णय वैज्ञानिक तथ्यों, स्थानीय अनुभवों और समूह चर्चा पर आधारित होते हैं

इस प्रकार किसान क्षेत्र विद्यालय किसानों को आत्मनिर्भर और विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम बनाता है।

## 3. किसान क्षेत्र विद्यालय के उद्देश्य

किसान क्षेत्र विद्यालय के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- ✓ किसानों में आत्मनिर्भर निर्णय क्षमता विकसित करना
- ✓ फसल-आधारित समस्याओं का स्थानीय एवं व्यावहारिक समाधान खोजने की क्षमता बढ़ाना
- ✓ रासायनिक कीटनाशकों के विवेकपूर्ण एवं न्यूनतम उपयोग को प्रोत्साहित करना
- ✓ सतत, पर्यावरण-अनुकूल और सुरक्षित कृषि को बढ़ावा देना
- ✓ किसान-किसान के बीच ज्ञान एवं अनुभव के आदान-प्रदान को सुवृद्ध करना

- ✓ नेतृत्व क्षमता एवं सामूहिक कार्य संस्कृति का विकास

## 4. किसान क्षेत्र विद्यालय की प्रमुख विशेषताएँ

किसान क्षेत्र विद्यालय को पारंपरिक विस्तार से अलग बनाने वाली प्रमुख विशेषताएँ हैं—

- ✓ खेत ही विद्यालय होता है, जहाँ वास्तविक परिस्थितियों में सीखना होता है
- ✓ पूरे फसल चक्र के दौरान प्रशिक्षण एवं अवलोकन
- ✓ समूह आधारित एवं सहभागी शिक्षण प्रणाली
- ✓ व्यावहारिक प्रयोग, परीक्षण एवं प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित सीख
- ✓ स्थानीय समस्याओं एवं संसाधनों पर केंद्रित दृष्टिकोण
- ✓ विस्तार कर्मी मार्गदर्शक एवं सुविधाकर्ता, न कि उपदेशक

## 5. किसान क्षेत्र विद्यालय की कार्यप्रणाली

### 5.1 समूह गठन

सामान्यतः 20-25 किसानों का एक समूह बनाया जाता है, जो समान फसल, क्षेत्र या कृषि समस्या से जुड़े होते हैं। समूह में महिला एवं युवा किसानों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है।

### 5.2 नियमित बैठकें

पूरे फसल काल में साप्ताहिक या पखवाड़ेवार बैठकें खेत में आयोजित की जाती हैं, जिससे फसल की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन संभव हो सके।

### 5.3 कृषि पारिस्थितिकी विश्लेषण

किसान फसल की अवस्था, कीट-रोग, मित्र कीट, मृदा नमी, मौसम आदि का विश्लेषण करते हैं और सामूहिक निर्णय लेते हैं। यह किसान क्षेत्र विद्यालय की सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि मानी जाती है।

## 5.4 प्रयोग एवं प्रदर्शन

रासायनिक बनाम जैविक, पारंपरिक बनाम उन्नत तकनीकों की तुलना हेतु खेत स्तर पर प्रयोग किए जाते हैं, जिससे किसान स्वयं परिणाम देख सकें।

## 5.5 समूह चर्चा एवं निष्कर्ष

प्रत्येक सत्र के अंत में किसान अपने अवलोकन साझा करते हैं, समस्याओं पर चर्चा करते हैं और सर्वसम्मति से निष्कर्ष निकालते हैं।

## 6. किसान क्षेत्र विद्यालय के लाभ

किसान क्षेत्र विद्यालय से किसानों और कृषि प्रणाली को अनेक लाभ प्राप्त होते हैं—

- ✓ किसानों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और विश्लेषणात्मक सोच का विकास
- ✓ कीटनाशकों के उपयोग में कमी, जिससे लागत घटती है
- ✓ उत्पादन, गुणवत्ता एवं लाभ में वृद्धि
- ✓ पर्यावरण संरक्षण एवं जैव विविधता संवर्धन
- ✓ महिला एवं युवा किसानों की सक्रिय भागीदारी
- ✓ दीर्घकालीन एवं टिकाऊ ज्ञान का निर्माण

## 7. किसान क्षेत्र विद्यालय की सीमाएँ

यद्यपि किसान क्षेत्र विद्यालय एक प्रभावी मॉडल है, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ हैं—

- ✓ समय और किसानों की निरंतर सहभागिता की आवश्यकता
- ✓ प्रशिक्षित एवं दक्ष सुविधाकर्ताओं की कमी
- ✓ बड़े क्षेत्र में एक साथ विस्तार अपेक्षाकृत धीमा
- ✓ प्रारंभिक स्तर पर लागत एवं संगठनात्मक प्रयास अधिक

## 8. किसान क्षेत्र विद्यालय बनाम पारंपरिक विस्तार

बिंदु	पारंपरिक विस्तार	किसान क्षेत्र विद्यालय
शिक्षण पद्धति	एकतरफा	सहभागी
किसान की भूमिका	श्रोता	सक्रिय सीखने वाला
निर्णय	विशेषज्ञ द्वारा	किसान द्वारा
ज्ञान का स्वरूप	निर्देशात्मक	अनुभव आधारित
सीखने का स्थान	कक्षा/सभा	खेत

## 9. भारत में किसान क्षेत्र विद्यालय की भूमिका

भारत में किसान क्षेत्र विद्यालय को आईसीएआर, कृषि विज्ञान केंद्र, राज्य कृषि विभाग, एफएओ, गैर सरकारी संगठन एवं निजी संस्थाओं द्वारा सफलतापूर्वक अपनाया गया है। विशेष रूप से धन, कपास, सब्जी एवं बागवानी फसलों में समेकित कीट प्रबंधन के लिए किसान क्षेत्र विद्यालय ने

उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। इससे न केवल कीटनाशकों का उपयोग घटा है, बल्कि किसानों की निर्णय क्षमता और आत्मनिर्भरता में भी वृद्धि हुई है।

### 10. निष्कर्ष

किसान क्षेत्र विद्यालय एक सशक्त, सहभागी एवं व्यवहारिक कृषि विस्तार मॉडल है, जो किसानों को ज्ञान का उपभोक्ता नहीं बल्कि ज्ञान का निर्माता बनाता है। यह

मॉडल सतत कृषि, पर्यावरण संरक्षण, लागत कमी और किसान सशक्तिकरण की दिशा में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ है। भविष्य में यदि डिजिटल उपकरणों, मोबाइल ऐप्स और आईसीटी आधारित सलाह सेवाओं के साथ किसान क्षेत्र विद्यालय का समन्वय किया जाए, तो इसकी प्रभावशीलता और व्यापकता और भी बढ़ाई जा सकती है।